आऊं खीजी आंके कीं चुआं, सा न वरे मूंजी जिभ।
पण अंई हिन माया मंझां, केही कढंदा निध।। १७ ।।

मैं तुम्हें खीजकर क्यों कहूं? मेरी जिह्वा से कठिन शब्द तुम्हारे लिए नहीं निकलते, पर तुम इसमें रहकर कौन-सा खजाना प्राप्त कर लोगे?

वेण विगो आंके चुआं, सा वढियां मुंहजी जिभ।
पण अंई हिनमें पई रह्या, हिन मंझां कां न थिंदियां सिध।। १८ ।।

तुम्हारे लिए कठिन शब्द यदि निकलें तो मैं अपनी जुबान के टुकड़े कर डालूंगी, पर तुम भी इसमें पड़े रहकर क्या करोगे? इसमें पड़े रहकर किसी का कोई काम सिद्ध नहीं हुआ।

हिन सोझरे जे न सुजातां, वभेरकां हीं ईं।
पोए सांणेनी सिपरियन अग्यां, मोंह खणदियूं कीं।। १९ ।।

इस दुपहरी के उजाले (जागृत बुद्धि के ज्ञान के उजाले) में दुबारा भी इस बार नहीं पहचाना तो फिर प्रीतम के सामने (घर चलकर) कैसे मुंह उठाएंगे?

पेरोनी पाण नजर न्हारींदे, व्यो अवसर हथां।
जडे हथे मंझे हली वेयां, तडे केहेडी थेईनी पाण मथां।। २० ।।

पहले भी अपने देखते-देखते हाथ से समय निकल गया और जब प्रीतम अपने में से चले गए तो अपने ऊपर कैसी बीती?

हींय हंद एहेडो आय, हिक वेरमें थिए वेणां।
साथ तां आईन सभे समझू, न्हाय केहे में मणां।। २१ ।।

यह स्थान ऐसा है कि एक पल में ही सब नष्ट हो जाएगा। हे सुन्दरसाथजी! आप सभी तो समझदार हैं। किसी में कोई कमी नहीं है।

साथ अंई कीं कीं न्हार्‌यो संभारे, गुण म छडो मोकरे मोय।
इंद्रावती चोय पेरे लगी, फिरी फिरीने केतरो चोय।। २२ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम कुछ तो देखो और पहचानो। अपने धनी को मत छोड़ो। माया से मोह मत करो। श्री इन्द्रावतीजी तुम्हारे चरणों में लगकर बार-बार कितना कहें कि तुम जागो।

॥ प्रकरण ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ ३८० ॥

विनती–राग धनाश्री

हूं तां पिउजीने लागूं छूं पाय, मारा वाला जेम आ फेरो सुफल मारो थाय।
जेम पिउजी ओलखाय मारा पिउजी, सुणोने अमारी वालाजी विनती।। १ ।।

हे मेरे पियाजी! मैं आपके चरणों लगती हूं जिससे मेरा यह फेरा (जागनी का ब्रह्माण्ड) सफल हो जाए। हे मेरे पिया! किसी तरह से आपकी पहचान हो जाए। यह मेरी विनती है। उसे सुनो।

Nijanand App

अमें पेहेला नव ओलख्या राज, अमने भरम गेहेने आण्या वाज।
भवसागरना जल छे अपार, तेतां तमे सेहेजे उतार्‌या पार।। २ ।।

हे राजजी! पहले हमने आपको नहीं पहचाना, क्योंकि पहले हम माया के नशे में हार गए (भरम में उलझ गए)। भवसागर में अथाह जल है (माया संसार का)। उससे आपने सहज में ही हमको पार उतार लिया।

तमे भली पेहेलीने कीधी मारी वहार, धणी लिए तेम लीधी सार।
चौद भवननी गम आंही, तेतां लखी सर्वे सास्त्रों मांही।। ३ ।।

हे धनी! पहले आपने अच्छी तरह से हमारी खबर रखी। जैसे एक पति अपनी पत्नी का ध्यान रखता है, उसी प्रकार आपने हमारा ध्यान रखा। चौदह भुवनों के ज्ञान माया तक ही सीमित हैं, ऐसा सब शास्त्रों में लिखा है।

ते तमे कीधी छे प्रकास, तेहेनी तारतम पाय पुरावी साख।
तमे अमने जुगते माया रामत देखाडी, तमे अमने घेर पोहोंचाड्या दुस्तर उतारी।। ४ ।।

इसका आपने हमें ज्ञान दिया और तारतम के ज्ञान से गवाहियां दिलाईं। आपने हमें बड़ी युक्ति से माया का खेल दिखाया और इस कठिन भवसागर से छुड़ाकर (परमधाम) अपने घर पहुंचाया।

अमें मनोरथ कीधां हता जेह, तमें पूरण कीधां सर्वे तेह।
तमे अमने मनोरथ करतां वार्‌या, तोहे कारज अमारा लई सार्‌या।। ५ ।।

हमने परमधाम में जो चाह खेल देखने की, की थी, वह सब आपने यहां पूरी कर दी। आपने तो हमें माया की चाहना से रोका था फिर भी हमारा कार्य (चाहना) सिद्ध हो गया।

अमने लागी हती जेहेनी रढ, ते तमे पूरण कीधी आंही आवी द्रढ़।
तमे अमने रामत देखाडवाने काज, अम पेहेलाने पधार्‌या श्री राज।। ६ ।।

हमें जिसको देखने की रट लगी थी, वह सब आपने यहां आकर अच्छी तरह से पूर्ण कर दी। हमें खेल दिखलाने के वास्ते आप हमसे पहले आए।

एवा मारा लाड पूरण कोण करे, बीजी दाण देह मायामां कोण धरे।
तमे मोसूं गुण कींधां छे अनेक, तेतां लख्या मारा रुदयामां लेख।। ७ ।।

इस प्रकार हमारे लाड कौन पूरे करेगा और आपके अलावा दूसरी बार माया में तन कौन धारण करेगा? आपने मेरे ऊपर अपार मेहर की है (गुण किए हैं) वह सब मेरे हृदय में लिखे हैं (मैं जानती हूं)।

तम उपर थी तिल तिल करी नाखूं मारी देह, तमे कीधां मोसूं अधिक सनेह।
हूं तो भामणियां लई लई जाऊं, तमसूं सुरखरू केणी पेरे थाऊं।। ८ ।।

आपके ऊपर मैं अपने तन के टुकड़े-टुकड़े करके कुर्बान कर दूं, क्योंकि आपने मुझसे इतना अधिक प्रेम किया है। मैं तो आप पर न्योछावर होती हूं। आपका सम्मान कैसे प्राप्त करूं?

तमे छो अमारडा धणी, तो आसडी पूरो छो अमतणी।
इंद्रावती चरणे लागे, कृपा करो तो जागी जागे।। ९ ।।

आप हमारे धनी हैं, इसलिए हमारी इच्छा पूरी करते हैं। श्री इन्द्रावतीजी चरणों में पड़कर कहती हैं कि आप कृपा करो तो सुन्दरसाथ जाग जाएं।

।। प्रकरण ।। १८ ।। चौपाई ।। ३८९ ।।

Nijanand App